ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 25 कुल पृष्ठ-8 1 से 7 फरवरी, 2018 दयानन्दाब्द 193 सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 मा. शु.-15

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक में लिये गये महत्त्वपूर्ण निर्णय

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन 6, 7 व 8 जुलाई, 2018 को दिल्ली में किया जायेगा

देश–विदेश में संचालित गुरुकुलों का ऐतिहासिक समागम

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली के रूप में प्रस्तुत करने तथा गुरुकुलों को शक्ति–सम्पन्न बनाने के लिए सरकार से माँग की जायेगी

गुरुकुलों के संचालकों एवं आर्यजनों से आर्य महासम्मेलन की तैयारी में जुट जाने का आह्वान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग की विशेष बैठक 29 जनवरी, 2018 को सार्वदेशिक सभा के भवन में आयोजित हुई। बैठक में सभा की विविध गतिविधियों पर गम्भीर विचार–विमर्श किया गया। सभा द्वारा प्रकाशित किये जा रहे वैदिक साहित्य एवं वेद भाष्य को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए सभी सदस्यों को जिम्मेदारियाँ सौंपी गई। इसी प्रकार प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं को नशाखोरी, धार्मिक पाखण्ड, कन्या भ्रूण हत्या आदि सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलाने के लिए निर्देश देने का निर्णय सर्वसम्मति से लिया गया। उक्त विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए सभी सदस्यों ने समाज में बढ़ती हुई नशाखोरी और उसके प्रभाव से बिगड़ते हुए समाज के ताने–बाने को एक बड़ी चुनौती बताया। धर्म के नाम पर जहाँ साम्प्रदायिकता एक चुनौती बनती जा रही है वहीं धार्मिक पाखण्ड एवं अन्धविश्वास भी चरम सीमा पर पहुँच चुका है। रोज नये–नये भगवान जन्म ले रहे हैं और भोलीभाली जनता की अन्धश्रद्धा का लाभ उठाकर अकूत धन–सम्पत्ति इकट्ठी करते हैं तथा विविध प्रकार से अनैतिक क्रिया–कलापों के लिए धन का दुरुपयोग करके धार्मिक जगत को अपमानित करते हैं। इसी प्रकार माँ के पेट में ही कन्या भ्रूण को समाप्त करने की कलुषित मानसिकता पूरे समाज को ग्रसित किये हुए है। युवाओं में अश्लीलता एवं गन्दे चलचित्रों के माध्यम से चरित्रहीनता और उद्दंडता बढ़ती जा रही है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रारम्भ से ही उक्त सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जागरूक रही है और जन–चेतना अभियान के माध्यम से समाज में इन बुराईयों के विरुद्ध आवाज़ उठाती रही है। अब सम्पूर्ण आर्य जगत इन बुराईयों के विरुद्ध युद्ध स्तर पर कार्य करे और इसके लिए आवश्यक है कि सभी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाएँ अपने–अपने प्रदेश में कार्यक्रम बनाकर जोरदार अभियान चलायें।

गत दिनों दिल्ली में सम्पन्न 'विश्व वेद सम्मेलन' के अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने सभा मंत्री एवं अन्य पदाधिकारियों से विचार–विमर्श करके 'अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन' सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आयोजित करने की घोषणा की थी। इस विषय पर अन्तरंग में विचार–विमर्श के पश्चात् निर्णय लिया गया कि गुरुकुल महासम्मेलन को पूरी ताकत लगाकर ऐतिहासिक सम्मेलन के रूप में आयोजित किया जाना चाहिए।

बैठक में विशेष रूप से उपस्थित लगभग एक दर्जन गुरुकुलों के संचालक स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती ने जहाँ गुरुकुल महासम्मेलन के प्रस्ताव का पुरजोर समर्थन किया वहीं यह भी बताया कि सार्वदेशिक सभा की ओर से यह पहला अवसर है जब पहली बार गुरुकुल महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इससे पूर्व इस तरह का गुरुकुलों का विशाल कार्यक्रम पहले कभी नहीं हुआ। स्वामी जी ने महासम्मेलन की सफलता के लिए अपना पूरा सहयोग देने की घोषणा की। गुरुकुल महासम्मेलन में गुरुकुलों के अतिरिक्त देश–विदेश के हजारों आर्य समाजों के पदाधिकारी भी सम्मिलित होंगे। यह भी निर्णय लिया गया कि गुरुकुल महासम्मेलन के लिए विभिन्न समितियों का गठन किया जायेगा जिसमें सभी कर्मठ कार्यकर्ताओं को दायित्व सौंपे जायेंगे। बैठक में अन्य कई प्रस्ताव पारित किये गये जिसमें क्रमशः महिलाओं पर हो रहे अत्याचार, बलात्कार एवं अपमानजनक व्यवहार के प्रति आक्रोश व्यक्त किया गया। बच्चों में निरन्तर बढ़ती जा रही उच्छृंखलता, अनुशासनहीनता एवं संस्कार शून्यता के कारण व्यापक रूप से नई पीढ़ी के बच्चे चारित्रिक पतन का शिकार हो रहे हैं यह गम्भीर चिन्ता की बात है। सरकार से माँग की गई कि अपने वायदे के अनुरूप गौहत्या एवं गौमाँस निर्यात पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाकर गौवंश की रक्षा की जाये। केन्द्र सरकार द्वारा शिक्षा नीति में किये जा रहे परिवर्तन एवं वैदिक शिक्षा बोर्ड के गठन में आर्य समाज के प्रबुद्ध विद्वानों को सम्मिलित किया जाये तथा उनके द्वारा दिये जाने वाले सुझावों पर गम्भीरता से विचार कर अमल किया जाये। बैठक उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुई।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के 39वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

तीन दिवसीय अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन व 251 कुण्डीय विराट् यज्ञ सोल्लास सम्पन्न

वैदिक यज्ञों से ही होगा पर्यावरण की समस्या का हल– केन्द्रीय मंत्री डा. हर्षवर्धन

पाखण्ड, अन्धविश्वास, शराबखोरी के विरूद्व आर्यजन अभियान चलायें– स्वामी आर्यवेश

राष्ट्रवादी शक्तियों का विघटनकारी तत्वों के विरूद्व संगठित होना समय की आवश्यकता–डा.अनिल आर्य

आर्य नेता दर्शन अग्निहोत्री, ठाकुर विक्रमसिंह व सुरेन्द्र कोहली ने फहराया ओ३म ध्वज

दिल्ली के साथ ही हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, हिमाचल, राजस्थान, जम्मू कश्मीर, झारखण्ड, बिहार, पश्चिमी बंगाल, चण्डीगढ़, पंजाब, मध्य प्रदेश, गुजरात, उड़ीसा, अमेरिका,बंग्लादेश, वैस्टइंडिज आदि से भी आर्य प्रतिनिधि पंहुचे

रविवार, 28 जनवरी 2018, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा रामलीला मैदान, अशोक विहार, दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन में मुख्य अतिथि केन्द्रीय मंत्री डा.हर्षवर्धन का स्वागत करते परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य, सार्वदेशिक सभा के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश, बृजमोहन गर्ग आदि। द्वितीय चित्र–ऐमिटी शिक्षण संस्थान के निदेशक, समारोह अध्यक्ष श्री आनन्द चौहान का अभिनन्दन करते स्वामी आर्यवेश, डा. अनिल आर्य, ओम सपरा (मैट्रो पोलटेन मैजिस्ट्रेट)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के तत्वावधान में दिनांक 26,27,28 जनवरी 2018 को रामलीला मैदान, अशोक विहार, फेज–4, दिल्ली के विशाल मैदान में तीन दिवसीय "अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन" का भव्य आयोजन किया गया। सम्मेलन में देश के विभिन्न प्रान्तों से लगभग 2500 आर्य प्रतिनिधि सम्मलित हुए। सम्मेलन के अन्तर्गत प्रातः 6.00 बजे से रात्रि 10.00 बजे तक निरन्तर 11 सत्र चले जिसमें मुख्य रूप से "राष्ट्रीय एकता तिरंगा यात्रा", योग साधना शिविर, 251 कुण्डीय पर्यावरण शुद्धि यज्ञ,राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन, व्यायाम शक्ति प्रदर्शन, राष्ट्रीय युवा सम्मेलन, वेद–संस्कृत रक्षा सम्मेलन, राष्ट्रीय कवि सम्मेलन,राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, संगीत संध्या, राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, शिक्षा–संस्कृति रक्षा सम्मेलन आदि मुख्य रहे। ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था प्रातः से देर रात्रि पर्यन्त चलती रही। प्रातः काल आचार्य अखिलेश्वर जी के सान्निध्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ, यज्ञ मण्डप की सुन्दरता देखते ही बनती थी। परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री श्री महेन्द्र भाई जी ने कर्मठ कार्यकर्ताओं श्री खेत्रपाल जी, प्रभुनाथ सिंह, वेद प्रकाश आर्य, सौरभ गुप्ता, राकेश आर्य, रामकृष्ण शास्त्री, अमित सिंह, विवेक अग्निहोत्री, हरीश सिंह, विक्रान्त चौधरी, अरूण आर्य, प्रदीप आर्य, वरूण आर्य, वीरेश आर्य, सन्तोष शास्त्री आदि के साथ व्यवस्था सम्भाली।

सम्मेलन में कन्या भ्रूण हत्या के विरूद्ध जनजागरण, तम्बाकू, मांसाहार, नशा मुक्त समाज की संरचना, युवा पीढ़ी को संस्कारित करने हेतु शिविर, आंतकवाद के विरूद्व अभियान और समाज में बढ़ते पाखण्ड अन्धविश्वास, शराबखोरी के विरूद्व तीव्र गति से अभियान चलाने के निश्चय हुए। पूरे देश में गौ हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध,आरक्षण जातिवाद आधारित समाप्त कर आर्थिक आधार पर करने के प्रस्ताव पारित किये गये। समारोह का संचालन परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने किया।

समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय मंत्री डा. हर्षवर्धन ने कहा कि वैदिक यज्ञों से ही पर्यावरण की शुद्धि होगी। यज्ञ वैदिक परम्परा की विरासत है, आज आर्य समाज को आगे आ कर बढ़ते पाखण्ड अन्धविश्वास के विरूद्व जनजागरण करना चाहिये। उन्होंने कहा कि आर्य युवक परिषद् डा. अनिल आर्य के कुशल नेतृत्व में युवा निर्माण का सराहनीय कार्य कर रही है।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने कहा कि प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने चुनावों के समय गौ मांस पर प्रतिबन्ध का वादा किया था, लेकिन वह अभी पूरा नहीं करपाये उसे उन्हें अविलम्ब पूरा करना चाहिये। पूरे देश में गौ हत्या पूर्ण प्रतिबन्ध लगा कर गौ हत्यारों को कड़ी सजा का प्रावधान करना चाहिये। उन्होंने लव जिहाद की समस्या पर भी सबको सजग किया तथा युवा पीढ़ी को संस्कारित करने की आवश्यकता पर बल दिया। समारोह अध्यक्ष शिक्षाविद श्री आनन्द चौहान ने ऐमिटी संस्थान की ओर से बधाई देते हुए कहा कि आर्य युवक परिषद् का नयी पीढ़ी को वैदिक विचारधारा से जोड़ने का प्रयास सराहनीय है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि आज लोगो को भगवा ओर तिरंगे से भी डर लगने लगा है, राष्ट्र को तोड़ने वाली शक्तियां सक्रिय हो रही हैं। यह स्थिति गम्भीर चिन्ताजनक है। ऐसे में आर्य युवक राष्ट्रीय एकता अखण्डता के लिये कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि जातिवाद आधारित आरक्षण देश की एकता में बाधक है, इसे समाप्त कर आर्थिक आधार पर लागु किया जाये। डा. आर्य ने कहा कि जम्मु कश्मीर में धारा 370 समाप्त कर उसे पूरे देश की मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य शीघ्र होना चाहिये।

251 कुण्डीय पर्यावरण शुद्धि यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अखिलेश्वर जी ने कहा कि आज पूरा विश्व पर्यावरण के लिये चिन्तित है, केवल वैदिक यज्ञ से ही हम वायु मण्डल को शुद्ध कर सकते हैं केन्द्र व राज्य सरकारों को बड़े बड़े यज्ञ करवाने की और ध्यान देना चाहिये तभी हम इस समस्या का हल निकाल सकते हैं।

वैदिक विद्वान आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ने कहा कि भारतीय संस्कृति सबसे प्राचीन व श्रेष्ठ है, यह बात हमें नयी पीढ़ी को बतानी तथा समझानी भी है जिससे युवा पीढ़ी अपने इतिहास व पूर्वजों पर गर्व करना सीखे।

शेष पृष्ठ 6 पर

यज्ञप्रेमी, धर्मनिष्ठ श्री दर्शन अग्निहोत्री का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,स्वामी आर्यवेश जी,आचार्य अखिलेश्वर जी व प्रवीन आर्या। द्वितीय चित्र–दानवीर ठाकुर विक्रम सिंह जी का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी व प्रवीन आर्या।

महर्षि दयानन्द जन्मदिवस तथा बोधोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक मनायें

वेद विरुद्ध मान्यताओं को चुनौती देने के लिए आर्यजन संकल्प करें

– स्वामी आर्यवेश

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्व पटल पर छाई हुई विविध विकृतियों के सुधारक के रूप में इस शस्य श्यामला भारत भूमि पर अवतीर्ण हुए थे। उन्होंने वेदों का अनुशीलन किया और उन्हीं के अनुसार समाज के सर्वांगीण परिष्कार का निश्चय किया। महर्षि ने सामाजिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, धार्मिक इन सभी विषयों पर प्रकाश डालकर उसको सही दिशा प्रदान करने का भागीरथ प्रयास किया था। उन्होंने अवतार वाद, जन्म पत्र, श्राद्ध इत्यादि का तर्कपूर्ण विरोध करते हुए, समाज को जगाने का कार्य किया। भारतीय संस्कृति की सुरक्षा की दृष्टि से और उसके वर्चस्व को स्थापित करने के लिए, अन्ध विश्वासों, कुसंस्कारों, कुरीतियों, जड़ताओं पर प्रहार किया। आज देश पुनः धार्मिक पाखण्ड भ्रष्टाचार साम्प्रदायिकता, जातपात, नशाखोरी, नारी उत्पीड़न, शोषण सहित अनेकों कुरीतियों से जकड़ा हुआ है। समय की पुकार है कि समाज में अत्यन्त गहराई तक व्याप्त अन्ध विश्वासों को जड़ से उखाड़ फेंका जाये और महर्षि का अन्धविश्वास कुसंस्कारों, कुरीतियों को दूर करने का सन्देश घर-घर पहुँचाया जाये।

नव-जागरण के पुरोधा, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस इस वर्ष फाल्गुन बदी दशमी विक्रमी सम्वत् 2074 तदनुसार 10 फरवरी 2018 दिन शनिवार तथा ऋषि बोधोत्सव 13 फरवरी, 2018 मंगलवार को पड़ रहा है अतः इन पावन पर्वों को अत्यन्त धूम धाम से समारोह पूर्वक अपने-अपने क्षेत्र में मनाएँ।

हमारा जीवन आज यदि समाज के अन्य लोगों की अपेक्षा श्रेष्ठ है तो वह केवल स्वामी दयानन्द जी के उच्च विचारों के मार्ग दर्शन के ही कारण है। स्वामी जी ने यह ज्ञान हम तक पहुँचाया है इसके लिए हम सब सदैव उनके ऋणी रहेंगे। इस ऋण को उतारने का एक ही उपाय है कि हम आजीवन उस महान ऋषि के विचारों को अधिकाधिक जनता तक पहुँचाकर अन्य बन्धुओं को भी सन्मार्ग पर लाने के लिए प्रयासरत रहें। हमारा एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए कि अधिक से अधिक लोगों और अन्ततः समूचे विश्व को आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनाना।

महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस एवं ऋषि बोधोत्सव के पर्वों के अवसर पर बृहद यज्ञों का आयोजन करें और यह आयोजन आर्य समाज से बाहर निकल कर जैसे पार्कों अथवा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर किये जायें तो अत्योत्तम रहेगा। इन बृहद यज्ञों में आर्य सदस्यों, परिवारों के अतिरिक्त जन सामान्य को भी प्रेम पूर्वक आमन्त्रित किया जाना चाहिए। यज्ञोपरान्त ऋषि लंगर, जलपान, प्रसाद आदि का वितरण भी अधिक से अधिक लोगों में करें।

यज्ञ के दौरान तथा बाद में आर्य उपदेशकों तथा स्वाध्यायशील विद्वान आर्य महानुभावों के प्रवचन अवश्य आयोजित करें जिससे जन साधारण को वैदिक, आध्यात्मिक तथा श्रेष्ठ

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

विचारों के द्वारा सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके। अपने-अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गों जैसे युवाओं, महिलाओं, वृद्धों, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार विमर्श या मार्गदर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियों या लघु सम्मेलनों अथवा कार्यशालाओं को आयोजित करें।

इस अवसर पर महर्षि के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर सत्यार्थ प्रकाश कथा का आयोजन भी प्रेरणास्पद हो सकता है। इस कथा से सत्यार्थ प्रकाश जैसे अनुपम ग्रन्थ के विचारों का लाभ लोगों को धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनैतिक उत्थान के लिए मिल सकता है।

अत्यन्त आवश्यक है कि महर्षि जन्म दिवस से लेकर ऋषि बोधोत्सव तक आर्य समाज भवनों पर विशेष रोशनी का प्रबन्ध किया जाये तथा प्रत्येक आर्य अपने-अपने घरों को भी दीपावली की तरह से सजायें। प्रत्येक आर्य की छत पर ओ३म् ध्वज अवश्य ही लगा होना चाहिए।

10 फरवरी से 13 फरवरी तक प्रत्येक आर्य समाज से प्रभात फेरी निकाली जानी चाहिए जिसमें आर्यजन परिवार सहित भारी संख्या में प्रातः काल महर्षि तथा प्रभु भक्ति के गीत गाते हुए निकलें, हाथों में ओ३म् ध्वज लिए हुए भजन गाते हुए, जन समूह अवश्य ही आकर्षण का केन्द्र बनेंगे। इस अवसर पर महर्षि तथा आर्य समाज से सम्बन्धित लघु साहित्य भी वितरित किया जा सकता है।

अपने-अपने आर्य समाज मंदिरों में या सार्वजनिक स्थानों पर भाषण या चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित करके समस्त प्रतियोगी बच्चों को पुरस्कार स्वरूप महर्षि जीवन चरित्र या सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार स्वरूप वितरित करें। आर्य शिक्षण संस्थाओं को इस प्रकार के आयोजन अपने-अपने विद्यालय के बच्चों के मध्य अवश्य ही आयोजित करने चाहिए।

क्षेत्रीय जनता को आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्प मूल्य का लघु साहित्य, स्वामी दयानन्द के चित्रों सहित कलेण्डर आदि भी स्थानीय जनता में निःशुल्क वितरित करें।

इस अवसर पर आर्य समाज के सभी सदस्यों की एक विशेष बैठक आयोजित करके आत्मावलोकन अवश्य करें कि क्या हमारी आर्य समाज की गतिविधियाँ सन्तोषजनक है? क्या इससे और अधिक कुछ किया जा सकता है?

महर्षि जन्मोत्सव के अवसर पर अपने-अपने क्षेत्र के प्रतिष्ठित नागरिकों, राजनीतिक तथा धार्मिक नेताओं तथा अपने समाज के सदस्यों को शुभ कामना सन्देश भी भेजें तथा पोस्टर भी दीवारों पर चिपकवाएँ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तत्कालीन समस्याओं के निवारण के साथ-साथ उस समय व्याप्त धार्मिक पाखण्ड के विरूद्ध पुरजोर आवाज उठाई थी। मेरा आप सब आर्यों से निवेदन है कि महर्षि जन्मोत्सव और बोधोत्सव के प्रत्येक कार्यक्रम में चाहे वह यज्ञ हो, चाहे जन जागृति यात्रा हो, चाहे व्याख्यान हो, चाहे कार्यशालाएं हो प्रत्येक स्थान पर धार्मिक पाखण्ड के विरूद्ध आवाज उठाई जाए। आर्य समाज को धार्मिक पाखण्ड के विरूद्ध पुरजोर आवाज उठाते हुए एकजुट होकर इस लड़ाई को लड़ना है। आर्य समाज ही इस सामाजिक बुराई से जनता जनार्दन को त्राण दिला सकता है। महर्षि जन्मोत्सव पर होने वाले विशेष यज्ञों में धार्मिक पाखण्ड के विरूद्ध एक आहुति आप सब अवश्य डालें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के इतने उपकार हम सबके ऊपर हैं जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता। सबसे अमूल्य उपकार वेदों के प्रति जागृति, वेद प्रचार व वेद मार्ग का रास्ता बताना है, क्योंकि वेद मार्ग पर चलकर हम सब कुछ श्रेष्ठ बना सकते हैं। आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार, मानव निर्माण, राष्ट्र निर्माण तथा सत्य धर्म का प्रचार करना है। वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है। अतः वेदमय होकर दयानन्द के भक्तों आगे बढ़ो और वेद प्रचार करो। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्वाकांक्षी योजना पूर्व में बनाई थी और पर्याप्त संख्या में वेद सैट प्रकाशित किये थे। उसी श्रृंखला में एक बार पुनः भारी संख्या में वेद सैट प्रकाशित करने का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। वेदों को जन-जन के हाथों में, प्रत्येक परिवार में, पुस्तकालयों में, विद्यालयों तथा कॉलेजों की लाइब्रेरियों में पहुँचाने का संकल्प लेकर सार्वदेशिक सभा ने अत्यन्त अल्प मूल्य पर वेद सैट देने का निश्चय किया है। महर्षि दयानन्द के जन्मोत्सव, बोधोत्सव तथा आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य के पास वेद पहुँचाने का यत्न करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को भी प्रेरित करें कि वे अत्यन्त अल्प मूल्य में प्राप्त हो रहे वेद सैट का अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर वेदों को अपने घर में लाकर उसे पवित्र करें और प्रतिदिन वेदों के स्वाध्याय का व्रत लें। वेद सैट का लागत मूल्य 4100/- रुपये है लेकिन 18 मार्च, 2018 तक अग्रिम धनराशि जमा कराने वालों को मात्र 2800/- रुपये में वेद सैट उपलब्ध कराया जायेगा।

- प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-2

आदर्श गुरुकुल सिंहपुरा-सुन्दरपुर, रोहतक, हरियाणा के 57वें वार्षिकोत्सव पर

नव-निर्मित भवन का लोकार्पण

हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा द्वारा किया गया

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ ओजस्वी उद्‌बोधन

राज्यसभा के सदस्य श्री शादीलाल बत्रा सांसद ने की सामाजिक परिवर्तन सम्मेलन की अध्यक्षता

26 जनवरी, 2018 को गणतन्त्र दिवस के अवसर पर आदर्श गुरुकुल सिंहपुरा–सुन्दरपुर, रोहतक, हरियाणा का 57वाँ वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम के साथ आयोजित किया गया। प्रातःकाल स्वामी आर्यवेश जी के ब्रह्मत्व एवं श्री शम्भू मित्र शास्त्री जी के संयोजन में यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें श्री सुरेश मित्तल सपत्नीक यजमान बने। उनके अतिरिक्त गुरुकुल के प्रधान डॉ. जगदीश जी, मंत्री श्री वेद प्रकाश आर्य एवं कोषाध्यक्ष श्री रामपाल आर्य ने भी यज्ञ में उपस्थित रहकर आहुतियाँ प्रदान की। यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। उन्होंने सभी उपस्थित आर्यजनों को गणतन्त्र दिवस के अवसर पर विशेष संकल्प लेने के लिए प्रेरित किया। यज्ञ के उपरान्त राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा के ध्वजारोहण के लिए रोहतक के प्रतिष्ठित समाजसेवी श्री राकेश गुगलानी तथा उनके परिवार के अन्य सदस्य पधारे एवं ध्वजारोहण के द्वारा गुरुकुल के उत्सव का उद्‌घाटन किया।

उत्सव में अनेक गणमान्य महानुभावों के अतिरिक्त हजारों की संख्या में आर्यजन सम्मिलित हुए। आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क एवं श्री हवासिंह तूफान के भजनों का कार्यक्रम श्रोताओं ने बड़े आनन्द के साथ सुना तथा और अधिक सुनाने की माँग श्रोताओं की तरफ से आती रही।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. बलवीर आचार्य, डॉ. बलदेव सिंह मेहरा एवं वर्तमान अध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्र जी के प्रवचन एवं महम क्षेत्र के विधायक श्री आनन्द सिंह डांगी के व्याख्यान हुए। उत्सव में मंच का संचालन आचार्य दीक्षेन्द्र आर्य ने बड़ी कुशलता के साथ निभाया तथा उनका सहयोग गुरुकुल के मंत्री श्री वेद प्रकाश आर्य ने किया।

हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा जी, राज्यसभा सदस्य श्री शादीलाल बत्रा जी, विधायक श्री आनन्द सिंह डांगी जी तथा सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने नव–निर्मित भवन का लोकार्पण कर महाशय बृजलाल स्मृति भवन, सेठ श्रीकृष्णदास स्मृति पुस्तकालय तथा राजकीय आयुर्वैदिक औषधालय का विधिवत उद्‌घाटन किया। भवन लोकार्पण के उपरान्त श्री हुड्डा जी तथा अन्य सभी नेता कार्यक्रम के विशाल मंच पर पधारे। जहाँ स्वामी आर्यवेश जी ने उनका स्वागत किया तथा अन्य विशिष्ट अतिथियों का गुरुकुल की ओर से सम्मान कराया। जिन नेताओं का सम्मान किया गया उनमें मुख्य रूप से श्री चक्रवर्ती शर्मा पूर्व विधायक, श्री भारत भूषण बत्रा पूर्व विधायक, श्री सन्तकुमार पूर्व मंत्री, श्री कृष्णमूर्ति हुड्डा मेयर रोहतक, श्रीमती रेनू डाबला, श्री रामचन्द्र ठेकेदार, श्री राकेश गुगलानी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। रोहतक के प्रसिद्ध समाजसेवी एवं पूर्व मंत्री सेठ श्रीकृष्णदास जी के सुपुत्र श्री मनमोहन गोयल जिनके विशेष सहयोग से पुस्तकालय में लोहे की अलमारियाँ, फर्नीचर, पुस्तकें एवं एयरकंडीशनरों की व्यवस्था की है ने भी अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

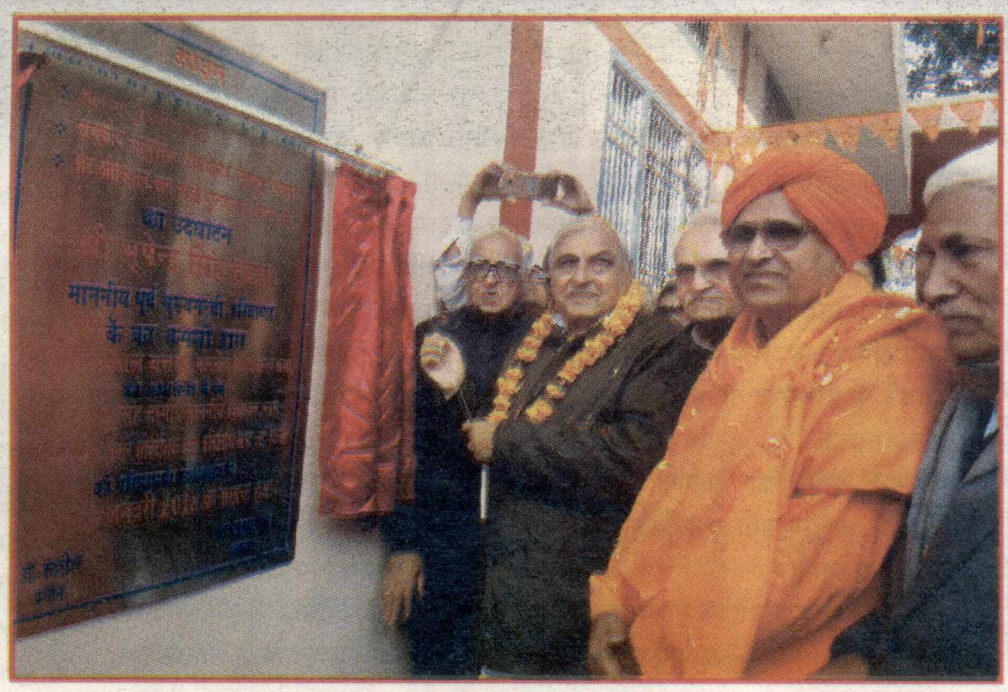

सभा को सम्बोधित करते हुए चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने कहा कि आर्य समाज की विचारधारा उन्हें विरासत में मिली है, उनके पिताजी और दादा जी आर्य समाज के साथ जुड़े हुए थे और उन्हीं की प्रेरणा से उनका लगाव आर्य समाज के साथ लगा हुआ है। उन्होंने बताया कि उनके दादा चौ. मातूराम आर्य इस इलाके के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने जनेऊ लिया था और इलाके की पंचायत ने उन्हें जनेऊ उतारने के लिए बाध्य किया तो उन्होंने कहा था कि मेरी गर्दन कट सकती है लेकिन जनेऊ नहीं उतर सकता। मेरे दादा जी ने शहीदे आजम भगत सिंह के चाचा सरदार अजीत सिंह जी के साथ राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था। मेरे पिता चौ. रणवीर सिंह गुरुकुल भैंसवाल में पढ़े और राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़े और बाद में उन्हें संविधान निर्मात्री सभा का सदस्य भी बनाया गया। श्री हुड्डा जी ने कहा कि देश की आजादी में आर्य समाज का बहुत बड़ा योगदान रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द जी, पं. रामप्रसाद बिस्मिल जी, शहीदे आजम भगत सिंह जी जैसे क्रांतिकारी आर्य समाज की ही देन हैं। उन्होंने गुरुकुलों के योगदान को भी राष्ट्र की उन्नति में महत्त्वपूर्ण बताया।

भाषण के उपरान्त चौधरी भूपेन्द्र सिंह हुड्डा जी का माल्यार्पण द्वारा सम्मान सर्वश्री गुरुकुल के प्रधान डॉ. जगदीश जी, मंत्री वेद प्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष रामपाल आर्य, उपप्रधान राजवीर वशिष्ठ, डॉ. बलवीर आचार्य, शेष पृष्ठ 5 पर

पृष्ठ–4 का शेष

आदर्श गुरुकुल सिंहपुरा–सुन्दरपुर, रोहतक, हरियाणा के 57वें वार्षिकोत्सव पर....

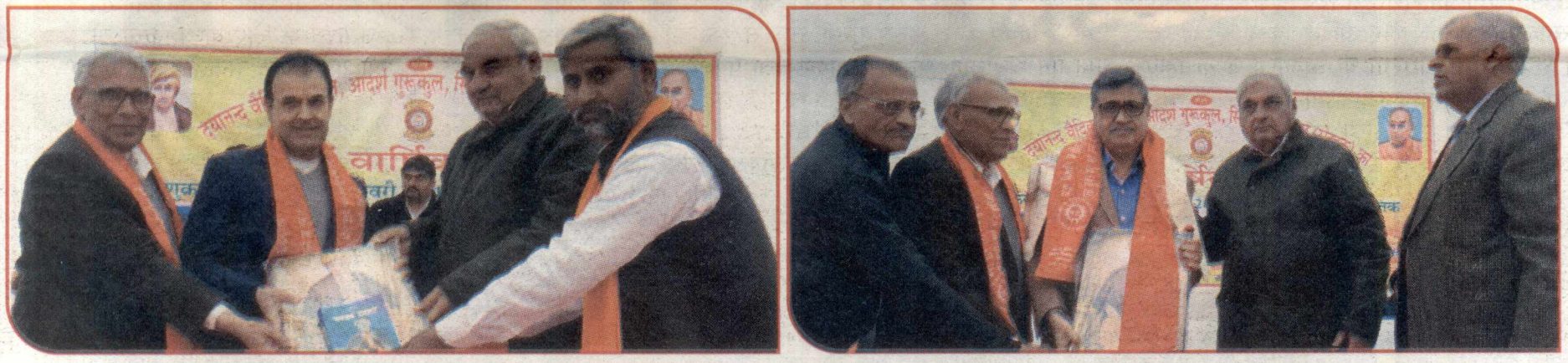

डॉ. बलदेव सिंह मेहरा, सहदेव बेधड़क, इंपेक्टर अर्जुन सिंह, किसान यूनियन के प्रधान ऋषिपाल, जगवीर सांगवान, विकास हुड्डा, अनिल सरंपच–इन्दरपुर, अनूप सरपंच–सिंहपुरा खुर्द, हरिओम सरपंच–सिवाना एवं गुरुकुल के प्राचार्य महिपाल सिंह आदि ने किया। गुरुकुल की ओर से डॉ. जगदीश, वेद प्रकाश आर्य, स्वामी आर्यवेश जी ने शॉल, स्मृति चिन्ह एवं साहित्य देकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष राज्यसभा सांसद शादीलाल बत्रा ने गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली पर अपने विचार रखते हुए कहा कि वैदिक शिक्षा से व्यक्ति के जीवन में संयम, सदाचार, परोपकार एवं देशभक्ति की भावना जगती है। समाज में समानता की भावना भी इस शिक्षा प्रणाली के द्वारा ही दी जा सकती है। उन्होंने गुरुकुल की उन्नति एवं विकास से प्रसन्न होकर भविष्य में भी अपने सहयोग की घोषणा की। विदित हो कि गुरुकुल के लिए श्री शादीलाल बत्रा जी ने लगभग एक करोड़ रुपये की राशि अपनी सांसद निधि में से समय–समय पर देकर सहयोग किया है।

कार्यक्रम सम्पन्न होने से पूर्व सामाजिक कार्यों में समर्पित भाव से संलग्न कुछ विशिष्ट कार्यकर्ताओं को शॉल एवं स्मृति चिन्ह देकर पूर्व मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा जी ने सम्मानित किया। सम्मानित किये जाने वालों में अमेरिका से पधारे श्री बालेन्द्र कुण्डू, आचार्य शम्भू मित्र शास्त्री, आचार्य दीक्षेन्द्र आर्य, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा तथा संयोजक बहन पूनम आर्या एवं बहन प्रवेश आर्या, मेयर रोहतक श्रीमती रेनू के नाम उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त श्री कुलदीप सिंह नम्बरदार, श्री रामकरन शर्मा एडवोकेट, श्री जयदीप धनखड़, श्री बिल्लू हुड्डा आदि का भी विशेष सम्मान किया गया। कार्यक्रम की सफलता में श्री वेद प्रकाश आर्य के अतिरिक्त श्री शम्भूमित्र शास्त्री, श्री राजेन्द्र आर्य, श्री गजनूप सिंह पी.टी.आई., श्री महिपाल सिंह प्राचार्य, आचार्य दीक्षेन्द्र आर्य तथा गुरुकुल के समस्त अध्यापकों एवं कर्मचारियों ने विशेष परिश्रम एवं सहयोग किया। गुरुकुल के प्रधान डॉ. जगदीश के मार्गदर्शन में गुरुकुल उन्नति की ओर अग्रसर है। कार्यक्रम की उपस्थिति एवं भोजन आदि की व्यवस्था की सभी लोगों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की। शाम के 5 बजे कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पृष्ठ–2 का शेष

तीन दिवसीय अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन का दिल्ली में भव्य आयोजन

पूर्व महापौर महेश शर्मा ने कहा कि राष्ट्रीय आन्दोलन में आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि हम हिन्दी भाषा को अपने जीवन में अपनायें, हिन्दी हमारी राष्ट्रीय एकता की मूलाधार है।

इस अवसर पर वैदिक विद्वान डा. महेश विद्यालंकार, स्वामी विश्वानन्द जी (मथुरा), स्वामी सच्चिदानन्द जी (यमुना नगर), स्वामी चन्द्रवेश जी (गाजियाबाद), स्वामी श्रद्धानन्द जी (पलवल),ठाकुर विकम सिंह, दर्शन अग्निहोत्री, सुरेन्द्र कोहली, भुवनेश खोसला (अमेरिका), आचार्य सुभाष (बंग्लादेश), आचार्या मन्जु (कोलकोता), आचार्य कृष्ण प्रसाद कोटिल्य (हजारीबाग), ओम सपरा, सुरेन्द्र गुप्ता, ओम प्रकाश यजुर्वेदी, चतरसिंह नागर, जितेन्द्र डावर, ब्र.दीक्षेन्द्र, योगेन्द्र शास्त्री, विद्यासागर शास्त्री (जीन्द), भानुप्रताप वेदालंकार (इन्दौर), अशोक तिवारी (लखनऊ), पं.रमेशचन्द स्नेही (हरिद्वार), प्रवीनआर्य (गाजियाबाद), आचार्य नकुलदेव (उड़ीसा), वीरेन्द्र योगाचार्य (फरीदाबाद), ब्र. विश्वपाल जयन्त (उत्तराखण्ड, विजय आर्य (पंचकुला), अर्चना पुष्करना, सुभाष बब्बर (जम्मू), स्वामी धर्ममुनि जी (बहादुरगढ़), मित्र महेश आर्य (अहमदाबाद), रामकृष्ण शास्त्री (बहरोड़), चन्द्रशेखर शास्त्री, स्वतन्त्र कुकरेजा, आनन्द सिंह आर्य (करनाल), यशपाल यश (जयपुर), आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, डा. सुन्दरलाल कथुरिया, यशोवीर आर्य, सन्तोष शास्त्री, देवेन्द्र भगत आदि वैदिक विद्वानों ने उद्‌बोधन दिए। तीनों दिन पं. घनश्याम प्रेमी के मधुर भजनों का कार्यक्रम रहा।

समारोह को सफल बनाने में सर्व श्री प्रवीन आर्य, रामकुमार सिंह, महेन्द्र भाई, प्रेम कुमार सचदेवा, सौरभ गुप्ता, अमीरचंद रखेजा, स्वामी प्रणवानन्द जी, चौ. ब्रह्मप्रकाश मान, मनोज मान, दशरथ भारद्वाज, दुर्गेश आर्य, देवमित्र आर्य, अन्जु जावा, नरेन्द्र कस्तुरिया, विनोद कालरा, राजीव आर्य, जितेन्द्र सिंह आर्य, अजय आर्य (करनाल), सौरभ आर्य (यमुना नगर), योगेन्द्र शास्त्री, मीना आर्या, भारत भूषण ग्रोवर, भूदेव आर्य, सतीश शास्त्री, प्रि. रमेश कुमारी भारद्वाज, अमित मान, देवेन्द्र भगत, सुदेश भगत, शिवम मिश्रा, साहिल आर्य, शिवकांत, यश आर्य, विमल आर्य, तिलक राज, आर.डब्लयु.ए.वजीरपुर क्षेत्र,रविदेव गुप्ता, राजीव कुमार परम,आर.एस.त्यागी,के.के.यादव, टी. आर.गुप्ता (जम्मू), वीरेश भाटी, डा. गजराज सिंह आर्य, देवदत आर्य, विश्वनाथ आर्य, माधव सिंह, अनुज आर्य, राजेन्द्र लाम्बा आदि अनेकों आर्यो के अथक पुरूषार्थ से

कार्यक्रम अपनी बुलन्दियों तक पंहुचा जिसे लम्बे समय तक अशोक विहार की जनता याद रखेगी। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् अपने सभी संन्यासियों, विद्वानो, दानदाताओ व कर्मठ, समर्पित सभी कार्यकर्ताओं का हार्दिक आभार व्यक्त करता है। डॉ. राजेश बत्रा के कुशल निर्देशन में प्रतिदिन योग साधना शिविर भी चला। राष्ट्रीय कवि सम्मेलन में धर्मेश अविचल, स्वदेश आर्य, कृष्ण गोपाल विद्यार्थी, रोहित आर्य, संदीप शजर ने कविता पाठ किया व श्री सत्य प्रकाश भारद्वाज ने कुशल मंच संचालन किया।

धर्मपारायणा माता श्रीमती गंवरी देवी का देहावसान

आर्य वीर दल जोधपुर के कर्मठ कार्यकर्ता श्री ओम प्रकाश जी की माता श्रीमती गंवरी देवी जी धर्मपत्नी श्री किशन जी सोनी का 90 वर्ष की अवस्था में 25 जनवरी, 2018 को निधन हो गया। माता जी एक धर्मपारायणा, कर्त्तव्यनिष्ठ, सहृदय, सेवाभावी एवं स्वाध्यायशील माता थीं तथा अपने पुत्रों और पुत्रियों को आर्य समाज की ओर जाने की प्रेरणा दिया करती थीं। माता जी ने महर्षि दयानन्द जी के विचारों को अपने जीवन में आत्मसात किया। समय–समय पर माता जी गौशाला में दान दिया करती थीं। आपका जीवन अत्यन्त सरल एवं सात्विकता से ओत–प्रोत था। अतिथि सत्कार व दान करने में आप सर्वदा आगे रहती थीं। आपके पुत्र श्री शिव जी सोनी आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उपमंत्री हैं। आप अपने पीछे दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ (सभी विवाहित) तथा पौत्र–पौत्रियों से भरपूर समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं। माता जी के निधन से आर्य समाज तथा आर्य वीर दल, जोधपुर, राजस्थान की अपूर्णीय क्षति हुई है। आर्य समाज तथा आर्य वीर दल जोधपुर के समस्त कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की सद्‌गति तथा परिवारजनों को दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

– श्री रामसिंह आर्य, जोधपुर

कड़ाके की ठण्ड व सर्द हवाओं के बावजूद आर्यो का उमड़ा जनसैलाब

आर्य समाज फोर्ट एवं आर्य वीरदल महावीर शाखा का 59वाँ वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

14 जनवरी, आर्य समाज फोर्ट एवं आर्य वीर दल महावीर शाखा का 59वाँ पांच दिवसीय वार्षिक उत्सव का ध्वजारोहण विधिवत किया गया। कार्यक्रम का ध्वजारोहण आर्य वीर दल राजस्थान के अधिष्ठाता संचालक भंवर लाल जी आर्य ने किया तथा आर्य वीर दल जोधपुर के अध्यक्ष हरी सिंह जी आर्य ने कार्यक्रम की घोषणा की।

आर्य समाज फोर्ट के मंत्री उम्मेद सिंह आर्य के संयोजन में चार दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें आर्य वीरो का लाठी कला, तलवारबाजी, मुक्केबाजी, योगासन, मेराथन दौड़, जूनियर व सीनियर वर्ग के फुटबॉल मुकाबलो का सुंदर आयोजन किया गया जिसमे आर्य वीरो ने अपने कौशल और दमखम का जोरदार प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम का समापन समारोह का भव्य आयोजन 14 जनवरी मकर संक्रांति के पर्व पर किया गया। जिसमे प्रातःकाल 4 बजे आर्य वीरो द्वारा प्रभात फेरी निकाली गई जिसको नारायण सिंह आर्य उप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर ने ओउम ध्वज दिखाकर रवाना किया।

समापन समारोह के कार्यक्रमों सबसे में पहले विक्रम सिंह जी आर्य ने बहुत सुंदर वैदिक यज्ञ करवाया तथा वेद विद्वान ब्रह्मा केशव देव् शास्त्री जी द्वारा सुन्दर प्रेरणादायक एवं वैदिक मान्यताओं की आवश्यकता पर महर्षि दयानन्द जी की जीवनी पर सुन्दर भजनोपदेश की प्रस्तुति ने पंडाल को वेदमयी बना दिया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रामसिंह जी आर्य उपमंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली भारत ने सभा को संबोधित करते हुवे कहा कि आज देश को वेद की दिशा और वैदिक शिक्षा की अतिआवश्यकता है उसके लिए महर्षि दयानंद को जानना और पढ़ना पडेगा तब ही धर्म और संस्कृति का उत्थान संभव है और भारत देश को विश्व गुरु के मार्ग पर पुनः ले जाना संभव होगा। वर्तमान में जातिवाद, धर्मान्धता, देश विरोधी ताकतों विचार धाराओं का अगर कोई जवाब दे सकता है या निष्पक्ष विरोध कर सकता है तो वह सिर्फ और सिर्फ आर्य समाज और महर्षि दयानंद की वेदानुकूल शिक्षा ही है जिसने देश की आजादी में 85 प्रतिशत नौजावानो को हंसते–हंसते शहादत देने को प्रेरित किया। और अगर वैदिक मान्यता इस देश में लुप्त हो गई तो धर्म का विनाश भी सुनिश्चित है। इसलिए देश का उत्थान करना है पुनः विश्व गुरु और सोने की चिड़िया बनाना है तो युवाओ को महर्षि दयानंद और वैदिक मान्यताओं को अपनाकर आर्य समाज के साथ जुड़ने का आहावन किया।

नारायण सिंह जी आर्य, भंवरलाल जी आर्य, हरिसिंह जी आर्य ने आजम जोधपुरी जी, थावरदास जी, ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

मोहमद रफी फाउंडेशन ग्रुप के विनोद जी गहलोत एवं पूरी टीम ने देश भक्ति गीतों तरानों से पंडाल में उपस्थित लोगो में जोश और ऊर्जा की लहर भर दी।

आर्य समाज जोधपुर के कोषाध्यक्ष चांदमल जी आर्य, आर्य वीर दल जोधपुर में कोषाध्यक्ष मदनगोपाल जी आर्य, आर्य वीर दल राजस्थान के महामंत्री लक्षमण सिंह जी आर्य एवं मंच पर उपस्थित अथितिगणों ने चार दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में विजेता–उपविजेता आर्य वीरो वीरांगनाओ को पारितोषिक प्रदान कर उत्साह वर्धन किया।

आर्य समाज फोर्ट के प्रधान गनपत सिंह जी आर्य ने अतिथियों का स्वागत अभिनंदन किया। फोर्ट के कोषाध्यक्ष जितेंन्द्र सिंह जी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी पधारे अतिथियों, आर्य सज्जनो, आर्य समाज आर्य वीर दल जोधपुर के पदाधिकारियों स्थानीय बंधुओ, एवं आर्य वीरो का धन्यवाद किया।

इस अवसर पर ओमकार जी वर्मा, राजेंद्र जी चावड़ा, भेरूसिंह जी दाता, राजेंद्र सिंह जी चौहान, भंवरलाल जी हटवाल, पुनाराम जी आर्य, दीपक सिंह जी पंवार, किशोर सिंह जी, कुलदीप सिंह जी, शेलेन्द्र सिंह जी, भरत जी नवल, जतन सिंह जी, अशोक जी आर्य, महेश जी आर्य, दिनेश जी अशोपा, जयदीप सिंह जी, मनीषा जी पंवार, सावित्री जी, कविता जी आर्या, भावना जी, अंकिता जी, शेफाली जी, ज्योति जी आर्या आदि आर्य समाज आर्य वीर दल जोधपुर के पधाधिकारी, समाजसेवी, गणमान्य सज्जन एवं मातृ शक्ति उपस्थित रहे।

डॉ. प्रशस्य मित्र शास्त्री जी को वाल्मीकि पुरस्कार

आर्य समाज के महोपदेशक एवं संस्कृत के प्रख्यात कवि तथा लेखक डॉ. प्रशस्य मित्र शास्त्री को उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी ने वर्ष–2017 का वाल्मीकि पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा की है। यह पुरस्कार 7 फरवरी, 2018 को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी प्रदान करेंगे।

ज्ञातव्य है कि संस्कृत भाषा में मौलिक लेखन एवं प्रचार कार्य के लिए संस्कृत अकादमी उत्तर प्रदेश द्वारा दिया जाने वाला यह राज्य का दूसरा सबसे बड़ा पुरस्कार है। इसमें 2,01000/– (दो लाख एक हजार) रुपये की राशि के साथ ही प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया जाता है।

डॉ. शास्त्री जी को संस्कृत भाषा में मौलिक लेखन के लिए ही देश का प्रख्यात साहित्य अकादमी सम्मान एवं राष्ट्रपति सम्मान भी प्रदान किया जा चुका है। संस्कृत भाषा में इन दोनों ही पुरस्कारों को प्राप्त करने वाले आप आर्य समाज के एकमात्र विद्वान हैं। संस्कृत में आपके चार कथा संग्रह, दो निबन्ध संग्रह तथा सात काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

विगत 2017 में प्रकाशित आपका संस्कृत कथा संग्रह 'मामकीनं गृहम्' पुस्तक पर भी आपको 21000/– रुपये का विशेष पुरस्कार उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान ने प्रदान करने की घोषणा की है। सार्वदेशिक सभा का परिवार इसके लिए आपको हार्दिक बधाई देता है।

30–31 जनवरी, 2018 को झज्जर में किया गया

स्वामी शक्तिवेश जी महाराज के 29वें बलिदान दिवस पर गायत्री महायज्ञ एवं श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी, क्रांतिकारी अतर सिंह आर्य, प्राचार्य श्यामलाल आर्य एवं आचार्य दीक्षेन्द्र आर्य ने दी श्रद्धांजलि

स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी–बहादुरगढ़ ने की कार्यक्रम की अध्यक्षता

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के संचालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले तथा अन्य कई संस्थाओं में सहयोग करने वाले आर्य राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित स्वामी शक्तिवेश जी महाराज के 29वें बलिदान दिवस के अवसर पर 30–31 जनवरी, 2018 को झज्जर में गायत्री महायज्ञ एवं श्रद्धांजलि समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के संचालक स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी ने की। इनके अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी–पलवल, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा एवं संयोजक बहन पूनम एवं प्रवेश आर्या, श्री अतर सिंह आर्य क्रांतिकारी, आचार्य दीक्षेन्द्र आर्य, प्राचार्य श्यामलाल आर्य, स्वामी योगानन्द, आचार्य योगेन्द्र, योगाचार्य सत्यपाल वत्स, योगाचार्य रमेश आर्य, पहलवान प्रेमदेव आर्य, आचार्य आनन्ददेव शास्त्री आदि ने सम्मिलित होकर स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम का आयोजन वैदिक सत्संग मण्डल झज्जर की ओर से किया गया था। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक पं. जयभगवान आर्य एवं सह–संयोजक श्री ओम प्रकाश यादव ने अपने विशिष्ट सहयोगियों सर्वश्री पं. रमेश चन्द्र वैदिक प्रधान, सुभाष आर्य सचिव, पूर्व प्राध्यापक द्वारका प्रसाद–उपप्रधान, सुबेदार भगत सिंह–उपप्रधान, भगवान सिंह आर्य–कोषाध्यक्ष आदि के सहयोग से कार्यक्रम को अत्यन्त प्रभावशाली एवं सफल बनाकर प्रशंसनीय कार्य किया। इस अवसर पर आयोजित यज्ञ में आचार्य बालेश्वर जी ने ब्रह्मा का पद संभाला। समारोह में पं. रमेशचन्द्र वैदिक द्वारा सम्पादित पुस्तक 'वैदिक भक्ति संगीत' का विमोचन स्वामी आर्यवेश जी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के उपरान्त ऋषि लंगर की भी सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

इस अवसर पर स्वामी शक्तिवेश जी की स्मृति में प्रमुख कार्यकर्ताओं को वैदिक साहित्य भेंटकर सम्मानित किया गया तथा आगन्तुक संन्यासियों एवं विद्वानों का भी साहित्य भेंटकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में पधारे स्वामी आर्यवेश जी का भी वैदिक सत्संग मण्डल समिति की ओर से विशेष सम्मान किया गया। कार्यक्रम में श्री पूर्ण सिंह देशवाल, डॉ. धर्मवीर आर्य, डॉ. भूपसिंह आर्य, श्री धर्म सिंह नादान, श्री रामनिवास जांगिड़ आदि भी उपस्थित थे। उत्साही युवक श्री जयभगवान आर्य के सुपुत्र श्री वेदप्रिय आर्य ने अपने साथियों के साथ कार्यक्रम की व्यवस्था में विशेष भूमिका निभाई।

स्वामी सोम्यानन्द जी का 'श्री राजकुमार कोहली वरिष्ठ विद्वान पुरस्कार' से हुआ भव्य सम्मान

प्राचीन समय में विद्वानों से राज्य संचालन के लिए समुचित मार्गदर्शन हेतु राजा उन्हें अपने साथ राजदरबार में उच्च स्थान देते थे। राष्ट्र में विद्वानों का सम्मान था इसीलिए राष्ट्र में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा थी। आज राष्ट्र को और विशेष कर युवाओं को दिशा निर्देशन की आवश्यकता है। संस्कारों को घर–घर पहुँचाने की जिम्मेदारी आर्य समाज निरन्तर रूप से निभाता आ रहा है। यह कार्य विद्वानों के सम्मान बिना अधूरा है।

इसी श्रृंखला में आर्य समाज सांताक्रुज ने अपने 74वें वार्षिकोत्सव 26, 27 और 28 जनवरी, 2018 के शुभअवसर पर स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी को 'श्री राजकुमार कोहली वरिष्ठ विद्वान् पुरस्कार' से सम्मानित किया।

स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती (पूर्व नाम सोहनलाल शर्मा) एक सम्पन्न गौड़ ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए। प्रपिता (बाबा) और माता–पिता के वैदिक संस्कार प्राप्त हुए। माध्यमिक स्तर से ही वैदिक पत्र–पत्रिकाओं और वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन आरम्भ कर दिया था। छठवीं कक्षा में पढ़ते हुए ही गाँव की आर्य समाज के पुस्तकाध्यक्ष बने जिससे अध्ययन में रुचि बढ़ी और वैदिक धर्म का प्रचार किया। शास्त्रार्थ किये और अनेकों को वैदिक धर्म से जोड़ा। गृहस्थ में रहते हुए वैदिक धर्म का पालन किया जिसमें विदुषी सहजीवनी पत्नी ने पूर्ण सहयोग दिया और सन्तानों को वैदिक धर्म की शिक्षा दी। वर्तमान में भी परिवार में वैदिक ग्रन्थों का पुस्तकालय है। भारतीय सेना, उत्तर प्रदेश शासन और निजी क्षेत्र के औद्योगिक संस्थानों में सेवारत रहते हुए भी आर्य समाज से हमेशा जुड़े रहे। सत्संगों में सपरिवार जाते रहे। प्रवचन भी देते रहे और विभिन्न पौराणिक तीर्थ स्थलों पर जाकर सत्य और असत्य का ज्ञान प्राप्त किया।

वर्तमान में निम्नलिखित पांच वैदिक संस्थानों में अवैतनिक रूप से निःस्वार्थ सेवा कर रहे हैं :–

1. संस्थापक व संचालक – श्रीधर विद्या मंदिर, मथुरा, उत्तर प्रदेश।
2. अधिष्ठाता – श्री सर्वदानन्द गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, साधु आश्रम, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश।
3. व्यवस्थापक, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली।
4. मंत्री गौ संरक्षण समिति, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली।
5. संगठन मंत्री, वैदिक विरक्त मण्डल, टिटौली, रोहतक, हरियाणा
6. मंत्री, बाल विकास सेवा समिति मथुरा, उत्तर प्रदेश

इसके अतिरिक्त आर्य समाज के चौथे नियम के अनुसार विभिन्न विद्वानों को सुनने और जनता को सुनाने के लिए आर्य समाजों के सत्संगों, उत्सवों, सम्मेलनों और गोष्ठियों में निराभिमान व विरक्त भाव से उपस्थित होकर सत्य और असत्य को जानने का प्रयास करते रहते हैं।

अपने ज्ञान का प्रचार पुस्तकों के माध्यम से आम जनता में समय–समय पर करते रहते हैं और जनता की शंकाओं का समाधान भी यथा स्थान करते रहते हैं। पुस्तकों और पत्रिकाओं में लेखों के माध्यम से जनता से सुझाव आमंत्रित करते रहते हैं। पाठकगण स्वामी जी को वैदिक धर्म के प्रचार हेतु बुलाकर इनकी निःस्वार्थ सेवा का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

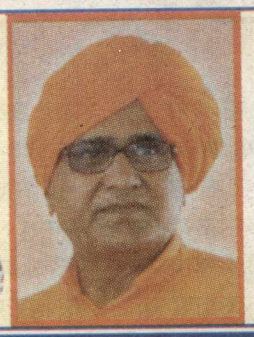

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में विश्व इतिहास में पहली बार

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन का

दिनांक : 6, 7 व 8 जुलाई, 2018 को
दिल्ली में होगा भव्य आयोजन

सभी गुरुकुल एवं आर्यजन अभी से तैयारी प्रारम्भ कर दें।

निवेदक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002
दूरभाष :– 011–23274771, 23260985
ई–मेल :– sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

लागत मूल्य 4100/- रुपये

(10 खण्ड, 1 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 18 मार्च, 2018 तक अग्रिम धनराशि जमा कराने पर केवल 2800/- रुपये में प्राप्त कर सकेंगे।

4100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 200/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002
दूरभाष :- 011-23274771, 23260985 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।